

डॉ. मार्क जेनिंग्स, मार्क, व्याख्यान 1, मरकुस की पुस्तक का परिचय

© 2024 मार्क जेनिंग्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स हैं जो मार्क के सुसमाचार की पुस्तक पर अपना शिक्षण दे रहे हैं। यह सत्र 1 है, मार्क की पुस्तक का परिचय।

नमस्ते, मेरा नाम मार्क जेनिंग्स है, और मुझे मार्क के सुसमाचार पर इस सत्र को आपके साथ शुरू करने में खुशी हो रही है क्योंकि हम इसे देखते हैं।

आप शायद यह भी देख सकते हैं कि मैंने जो स्लाइड बनाई है, उसमें मार्क के सुसमाचार का कलात्मक चित्रण है। जैसा कि आप शायद जानते हैं, प्रत्येक सुसमाचार के साथ एक पारंपरिक प्रतीक जुड़ा हुआ है, और इसलिए जब आप इस पेंटिंग को देखेंगे, तो आप मार्क के कान में एक शेर को फुसफुसाते हुए देखेंगे, जब वह अपना सुसमाचार लिख रहा था। और मुझे लगता है कि यह दिलचस्प है कि शेर को संकेत के रूप में चुना गया था क्योंकि मार्क के सुसमाचार में जो कुछ हो रहा है, उसके बहुत सारे ज्वलंत चित्र हैं।

आज मैं इस पहले व्याख्यान के साथ जो करना चाहता हूँ, वह वास्तव में क्षेत्र को निर्धारित करना है, यदि आप चाहें तो। मैं इस बारे में थोड़ी बात करना चाहता हूँ कि सुसमाचार क्या है, सुसमाचार क्या नहीं है, हमें उस शैली को समझने में मदद करना चाहता हूँ जिस पर हम अगले कई हफ्तों में विचार करने जा रहे हैं। मैं सुसमाचार की ऐतिहासिक सत्यता के प्रश्न पर भी चर्चा करना चाहता हूँ।

दूसरे शब्दों में, हमें क्यों इस बात पर भरोसा करना चाहिए कि मार्क जो कह रहा है वह सच और सटीक है। और फिर कुछ परिचयात्मक मामलों, कुछ विषयों पर विचार करें जिन्हें हम मार्क के सुसमाचार, लेखकत्व, ऐतिहासिक सेटिंग के साथ देखने जा रहे हैं। बस उस मंच को तैयार करना शुरू करें ताकि जब हम अपने अगले समय में मार्क अध्याय 1 में प्रवेश करें, तो हमारे पास कम से कम यह अच्छी तरह से पता चल जाए कि कहाँ से शुरू करना है।

मेरे पास यहाँ सी.एस. लुईस का एक उद्धरण है जो मुझे हमेशा काफी जानकारीपूर्ण लगता है। कॉर्कस्कू से लेकर गिरजाघर तक, किसी भी कारीगरी के टुकड़े को परखने के लिए पहली योग्यता यह जानना है कि यह क्या है, इसका उद्देश्य क्या है, और इसका उपयोग कैसे किया जाना है। और मुझे लगता है कि मार्क के सुसमाचार पर हमारी चर्चा शुरू करने के लिए एक अच्छी जगह यह है कि हम जिस बारे में बात कर रहे हैं उसके बारे में सोचना शुरू करें।

जब हम यहाँ सुसमाचार शब्द का प्रयोग करते हैं तो हमारा क्या मतलब होता है? यीशु के जीवन में कौन-कौन से लोग हैं, इसके विवरण के लिए हमारा प्राथमिक स्रोत सुसमाचार है। लेकिन वे क्या हैं? यह शब्द अपने आप में दिलचस्प है। मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी पूछा है कि इसे सुसमाचार क्यों कहा जाता है।

लेकिन गॉस्पेल पुरानी अंग्रेज़ी के गॉडस्पेल से आया है, जो कि ग्रीक शब्द यूंजेलियन का अनुवाद है, जिसका मूल रूप से मतलब अच्छी ख़बर या अच्छी खबर है। तो यह शब्द यूंजेलियन, जो कि पुरानी अंग्रेज़ी में गॉडस्पेल और फिर आज की अंग्रेज़ी में गॉस्पेल के रूप में अनुवादित होता है, में अच्छी ख़बर या अच्छी खबर का विचार था। और अक्सर इस शब्द यूंजेलियन का इस्तेमाल किसी बड़ी जीत की घोषणा करने के लिए किया जाता है।

हम इस यूंजेलियन को रोमन शासकों द्वारा इस्तेमाल होते हुए देखते हैं जब वे किसी युद्ध में जीत हासिल करने या किसी जीत के बारे में परेड करते थे या सम्राट के रूप में अपने उद्घाटन के समय। उनके पास एक यूंजेलियन होता था। वे अच्छी खबर की घोषणा करते थे।

हम इसे यशायाह में भी इसी तरह देखते हैं। जब आप यशायाह 52 को देखते हैं, तो पहाड़ों पर शुभ समाचार लाने वालों के पैर कितने सुंदर लगते हैं। यशायाह के यूनानी अनुवाद में यह यूंजेलिओन होगा।

पहाड़ों पर उन लोगों के पैर कितने सुंदर हैं जो यूंजेलियन लाते हैं, जो शांति की घोषणा करते हैं, जो अच्छी खबर लाते हैं, जो उद्धार की घोषणा करते हैं, जो सियोन से कहते हैं, तुम्हारा परमेश्वर राज करता है। यशायाह में ध्यान दें कि हमारे पास वह घोषणा का विचार है, कि तुम्हारा परमेश्वर राज करता है। हम इसे मार्क के सुसमाचार में देखते हैं जब हम अगली बार अध्याय 1 को देखते हैं जब वह सुसमाचार, सुसमाचार की शुरुआत के बारे में बात करता है।

यह इस घोषणा से जुड़ा है कि परमेश्वर का राज्य आ गया है। वे वहाँ पश्चाताप करने और यूंजेलियन, यीशु के बारे में अच्छी खबर पर विश्वास करने के लिए आए थे। लेकिन समय के साथ, एक घोषणा के रूप में यूंजेलियन की यह समझ बदलनी शुरू हो गई, एक शैली में बदलना शुरू हो गया।

इसलिए जब हम इन लिखित संस्करणों, मैथ्यू, मार्क, ल्यूक और जॉन को देखते हैं, तो हमें उनके साथ जुड़ा हुआ सुसमाचार का यह शीर्षक मिलता है। सुसमाचार उनके साथ जुड़े होने का कारण संभवतः मार्क 1:1 है और कैसे मार्क यह घोषणा करके शुरू करता है कि वह जो कर रहा है वह एक यूंजेलियन है। तो यह विचार, यह शैली, यदि आप चाहें, तो सुसमाचार का आकार लेना शुरू कर दिया।

तो जब हम सुसमाचार के बारे में बात करते हैं तो इसका क्या मतलब है? खैर, उनके अलग-अलग गुण हैं जिनके बारे में मुझे लगता है कि हमें जागरूक होने की ज़रूरत है। सबसे पहले तो वे ऐतिहासिक हैं। वे इतिहास की तरह काम करते हैं।

वे परम्पराओं से प्रेरणा लेते हैं। वे अन्य स्रोतों से प्रेरणा लेते हैं। वे प्रत्यक्षदर्शियों से प्रेरणा लेते हैं।

अगर आप कभी रुचि रखते हैं, तो उदाहरण के लिए, ल्यूक के सुसमाचार के पहले चार छंदों को देखें, जहाँ ल्यूक एक इतिहासकार के रूप में अपनी कार्यप्रणाली प्रस्तुत करता है, अगर आप

चाहें तो। दूसरा, इतिहास के रूप में, वे एक ऐतिहासिक संदर्भ, पहली सदी के फिलिस्तीन में सेट हैं। वे हमें तिथियाँ, स्थान बताते हैं।

वे जानकारी देते हैं। दूसरे शब्दों में, प्रत्येक सुसमाचार के लेखक खुद को कुछ ऐतिहासिक कार्य करते हुए प्रस्तुत कर रहे हैं। वे मिथक नहीं कर रहे हैं।

यह मिथक-निर्माण नहीं है। वे जो लिख रहे हैं वह कोई दंतकथा नहीं है। यह यीशु के कार्यों, उनके शब्दों, उनकी मृत्यु, उनके पुनरुत्थान, उनके दावों, उन दावों के उनके औचित्य को वास्तविक समय में घटित कुछ के रूप में प्रस्तुत करता है।

हम यह भी देखते हैं कि इन सुसमाचारों में कथात्मक पहलू भी हैं। दूसरे शब्दों में, वे केवल कथनों का संग्रह नहीं हैं। वे शब्दों का संग्रह नहीं हैं।

वे कहानियाँ हैं। अब, समझिए जब मैं कहानियाँ कहता हूँ, तो मेरा मतलब काल्पनिक नहीं होता। हम पहले ही यह स्थापित कर चुके हैं कि वे खुद को ऐतिहासिक रूप में प्रस्तुत करते हैं, लेकिन वे कथाएँ हैं।

उनमें एक कथानक है। कुछ पात्र हैं जिनका परिचय कराया गया है और उन्हें पात्रों के बारे में बातें बताई गई हैं। उनमें संघर्ष है।

आप सुसमाचार के माध्यम से आगे बढ़ने वाले विषयों को देखते हैं। वहाँ दृष्टिकोण हैं, और वहाँ सेटिंग हैं। और सभी कहानियों की तरह, वे निष्पक्ष नहीं हैं।

हमारी 21वीं सदी की दुनिया में, हम कभी-कभी पूर्वाग्रहों को गलत या अनुचित मानते हैं। खैर, मैं आपको बता दूँ, सुसमाचार बहुत पक्षपाती हैं। वे यीशु के बारे में अपनी समझ प्रस्तुत करते हैं।

लेकिन सिर्फ़ इसलिए कि वे पक्षपाती हैं इसका मतलब यह नहीं है कि यह सच नहीं है। लेकिन वे जिस कहानी को चित्रित कर रहे हैं उसमें वे खुद को पेश कर रहे हैं। वे अपनी कहानी के तत्वों को बहुत उद्देश्यपूर्ण ढंग से चुन रहे हैं ताकि हमें यीशु के बारे में कुछ बता सकें।

अब, जब हम बाइबिल की कहानियों पर विद्वानों की सामान्य स्थिति के बारे में सोचते हैं, दुर्भाग्य से, हम पाते हैं कि जैसा कि मैंने अभी साझा किया है, उनमें एक ऐतिहासिक गुण है, उनमें एक कहानी का गुण है, और इस सब में एक धार्मिक पहलू शामिल है, कि बाइबिल के विद्वानों में चीजों की सामान्य स्थिति मेरे द्वारा अभी बताई गई कुछ बातों पर सवाल उठाती है, विशेष रूप से ऐतिहासिक सटीकता के बारे में पहला बिंदु। और मुझे लगता है कि जब हम मार्क का अध्ययन शुरू करते हैं, तो हमारे लिए आधुनिक बाइबिल विद्वानों में चीजों की स्थिति को थोड़ा समझना और फिर सुसमाचार की ऐतिहासिक सत्यता पर चर्चा करने में सक्षम होना शायद सार्थक हो। 20वीं सदी के नए नियम के विद्वान रूडोल्फ बुल्टमैन ने लिखा, मुझे वास्तव में लगता है कि हम यीशु के जीवन और व्यक्तित्व के बारे में लगभग कुछ भी नहीं जान सकते हैं, क्योंकि शुरुआती ईसाई स्रोत दोनों में से किसी में भी रुचि नहीं दिखाते हैं, या इसके अलावा, खंडित और अक्सर पौराणिक हैं।

आज बाइबल संबंधी विद्वानों में सामान्य स्थिति यही प्रतीत होती है। सुसमाचार संबंधी चिंताओं के अलावा, ऐसा लगता है कि बाइबल के अधिकांश विद्वान इस धारणा को अस्वीकार करते हैं कि यीशु एक मनुष्य से अधिक कुछ थे। वे कहेंगे कि मार्क का सुसमाचार अपने विवरणों के संबंध में विश्वसनीय नहीं है, बल्कि यह मिथक निर्माण की एक लंबी प्रक्रिया का उत्पाद है।

दूसरे शब्दों में, आप अक्सर जो वाक्यांश सुनते हैं वह इतिहास के यीशु बनाम आस्था के मसीह का विचार है, कि इतिहास के यीशु तक पहुँचना कठिन है क्योंकि यह आस्था के मसीह में धुंधला गया है। दूसरे शब्दों में, जो कुछ भी उपलब्ध है वह वही है जो प्रारंभिक चर्च के ईसाइयों ने इसके बारे में कहा है। आप सोच सकते हैं कि यह कैसे हुआ।

खैर, हमेशा से ऐसा नहीं था। लंबे समय तक, न्यू टेस्टामेंट के विद्वान और चर्च ने सुसमाचार की ऐतिहासिक सत्यता को माना, लेकिन ज्ञानोदय की सुबह के साथ, तर्कवाद पर जोर बढ़ने के साथ, यह विचार कि अगर कुछ उचित रूप से दोहराया नहीं जा सकता है, तो उस पर संदेह किया जाना चाहिए, सुसमाचार की ऐतिहासिकता को चुनौती दी जाने लगी। मैं मार्क के सुसमाचार में जाने से पहले इस पर थोड़ी चर्चा करना चाहता हूँ क्योंकि तर्कवाद का दर्शन इस बात को प्रभावित करता है कि हम कैसे पढ़ते हैं या कोई व्यक्ति सुसमाचार को कैसे पढ़ता है।

हम कभी भी किसी तटस्थ स्थिति के साथ सुसमाचार के पास नहीं आते हैं। हम अपने विश्वास के आधार पर, चीजों के बारे में अपनी समझ के आधार पर, और इस आधार पर कि हम विभिन्न तर्कों के संपर्क में कैसे आए हैं, अलग-अलग स्थिति के साथ आते हैं। उदाहरण के लिए, हममें से जिन्होंने 18वीं और 19वीं शताब्दी से आने वाले विभिन्न कार्यों को पढ़ा है, ऐतिहासिक यीशु की तथाकथित पहली खोज, वहाँ मुख्य विचार यह था कि यीशु एक साधारण मनुष्य थे, एक नैतिक शिक्षक जिन्होंने प्रेम और लोगों के अनंत मूल्य की घोषणा की।

इसे अक्सर उदार यीशु के रूप में वर्णित किया गया था। इस पहली खोज के दौरान जो हुआ वह यह था कि सुसमाचार में जो कुछ हो रहा था उसे इस विचार के भीतर फिट करने की कोशिश की गई कि यीशु कौन होना चाहिए। आपको चमत्कारों के लिए ये दूरगामी तर्कसंगत स्पष्टीकरण मिलेंगे क्योंकि चमत्कार तर्कसंगत विचार के विरुद्ध हैं।

उन्हें दोहराया नहीं जा सकता। वे तर्कसंगत नहीं हैं। आप कुछ सुझाव सुनेंगे जैसे कि, ठीक है, यीशु वास्तव में पानी पर नहीं चले थे।

वह किनारे पर चला, लेकिन उसके पैरों पर धुंध थी, और इसलिए ऐसा लग रहा था कि वह पानी पर चल रहा है। अल्बर्ट श्वित्ज़र ने 18वीं और 19वीं सदी में आए कई अध्ययनों को देखा, तो पाया कि इन सभी अध्ययनों में एक बात समान थी: कि नासरत के यीशु को आधुनिक धर्मशास्त्र ने ऐतिहासिक वेश में पहनाया था। दूसरे शब्दों में, ये सभी अध्ययन ऐतिहासिक यीशु को इस तरह से प्रस्तुत करते प्रतीत हुए कि यह बिल्कुल वैसा ही लग रहा था जैसा कि लेखकों ने खुद महत्व दिया था।

मुझे लगता है कि यह हम में से हर किसी के लिए एक चेतावनी है क्योंकि हम मार्क के सुसमाचार में प्रवेश करते हैं, हमेशा इस बात पर ध्यान दें कि जब हम मार्क को पढ़ रहे हैं तो हम यह पता लगा रहे हैं कि यीशु कौन है और मार्क यीशु के बारे में क्या कह रहा है और यीशु को मेरे जैसा या आपके जैसा दिखाने के प्रलोभन का विरोध करें। इस तथाकथित पहली खोज के बाद, 18वीं और 19वीं शताब्दी के अनुकूल उदार धर्मशास्त्र के संदर्भ में यीशु कौन थे, यह समझने के लिए सुसमाचारों का उपयोग करने की कोशिश की गई, हम 20वीं शताब्दी और तथाकथित नो क्रेस्ट में चले गए। यह रुडोल्फ बुल्टमैन और अन्य हैं, जहां अवलोकन यह बन गया कि ऐतिहासिक यीशु के बारे में वास्तव में कुछ भी नहीं जाना जा सकता है।

अगर आप चाहें तो इसे कट्टरपंथी संदेहवाद कह सकते हैं। अब, हमें यह समझना चाहिए कि यह सब धार्मिक स्कूलों के इतिहास के रूप में जाने जाने वाले इतिहास से निकल रहा है। धार्मिक स्कूल के इतिहास का विचार मूल रूप से यह है: धार्मिक विकास क्रमिक है।

दूसरे शब्दों में, धर्म किसी सरल चीज़ से जटिल चीज़ की ओर विकसित होते हैं। इसलिए, इस विचारधारा के अनुसार, यीशु एक यहूदी व्यक्ति के रूप में शुरू होता है, लेकिन एक बार जब चर्च ग्रीक मंडलियों में फैल गया, तो यह अब यीशु बन गया, साधारण यीशु गैलीलियन मूर्तिपूजक अवधारणाओं से भर गया, यहाँ तक कि दैवीय तक। इसलिए, इस खोज-रहित स्थिति के अनुसार, जो हम देखते हैं वह यीशु कौन है, इस बारे में धार्मिक दृष्टिकोण के इस इतिहास का फल है।

मार्क का सुसमाचार हमें वास्तविक यीशु के बारे में ज़्यादा नहीं बताता, लेकिन इस विकासवादी प्रक्रिया के बारे में बताता है। दूसरे शब्दों में, हमारे पास वास्तविक रूप से कुछ भी नहीं है। बुल्टमैन का कहना है कि प्रामाणिक यीशु के बारे में कुछ भी नहीं जाना जा सकता, सिवाय इसके कि वह अस्तित्व में था, किसी तरह का पैगंबर था, और उसने परमेश्वर के राज्य की घोषणा की थी।

अब, यह हमेशा से ऐसा नहीं रहा है। ऐतिहासिक यीशु के लिए एक नई या दूसरी खोज कही जाती है। यह 50 से 70 के दशक के आंकड़े हैं, इस खोज की प्रतिक्रिया में, इस विचार के लिए कि यीशु के बारे में कुछ भी नहीं जाना जा सकता है, कि सुसमाचार ने हमें यीशु के बारे में कुछ नहीं बताया।

के सेमन और अन्य लोगों ने तर्क दिया कि सुसमाचारों को हमें कुछ बताना चाहिए। भले ही आप अलौकिक को अस्वीकार कर दें, फिर भी कुछ ऐसा होना चाहिए जो सुसमाचारों से प्राप्त किया जा सके। उसके बाद, हम अब उस अवधि में हैं जिसे तीसरी खोज के रूप में जाना जाता है, जो 80 के दशक, 1980 के दशक से लेकर आज तक है।

यहाँ, पद्धतियों पर जोर दिया गया था। सुसमाचार इस बात पर अधिक ध्यान देने लगे कि यह हमें यीशु के बारे में क्या बता सकता है। आपको इस तीसरी खोज के अंतर्गत आने वाली राय की एक विस्तृत श्रृंखला मिलेगी।

जीसस सेमिनार के नाम से जाने जाने वाले समूहों की राय, जो 20वीं सदी के उत्तरार्ध में अपने चरम पर थी, की अपनी बहुत ही विशिष्ट पद्धति होगी कि किस तरह से समझा जा सकता है कि जीसस कौन है या नहीं है और आज एन.टी. राइट और अन्य लोगों की तरह यह अधिक आम है। यहाँ मुख्य बात हमेशा यह है कि सुसमाचारों में ऐतिहासिक जीसस की खोज वैध है। इसमें आशावाद है।

जबकि नो क्रेस्ट में निराशावाद की बात कही गई है, तीसरी क्रेस्ट में आशावाद की बात कही गई है। कुछ तो जाना जा सकता है। यह सिर्फ आपके तरीके पर निर्भर करता है।

मैं भी यहीं पर आता हूँ। मुझे लगता है कि सुसमाचार हमें यीशु के बारे में बहुत कुछ बताते हैं, यीशु कौन है, यीशु कौन था। कार्यप्रणाली का सवाल यह है कि पहली सदी के बारे में क्या है? मूल संदर्भ के बारे में क्या है? हम सुसमाचार को उस तरह से कैसे पढ़ते और समझते हैं जिस तरह से इसके मूल पाठकों ने इसे समझा होगा? हमें कौन से सवाल पूछने चाहिए? इसका मतलब है कि, शायद अभी, आप में से हर कोई यही सवाल पूछ रहा है।

आखिर क्यों मैंने पिछले कुछ मिनट इस बात पर चर्चा करने में बिताए कि ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यीशु कौन हो सकते हैं? सबसे पहले, इसका कारण सरल है, क्योंकि मैं चाहता था कि आप देखें कि यह प्रक्रिया कैसे हुई है, खासकर पश्चिमी विचारों में। कैसे हम सदियों के भरोसे, मार्क के सुसमाचार और अन्य सुसमाचारों की ऐतिहासिक सत्यता से आगे बढ़कर अब ज्यादातर संदेह या कम से कम कुछ संशयवाद तक पहुँच गए हैं।

ज्ञानोदय और तर्कवाद ने बाइबिल के विद्वानों को कैसे प्रभावित किया है। साथ ही, मेरा मानना है कि ऐतिहासिक यीशु के बारे में किसी का मूल्यांकन और कोई कितना जान सकता है, यह कई कारकों पर निर्भर करता है। हम स्रोतों के रूप में क्या स्वीकार करते हैं? हम कौन से मानदंड और तरीके इस्तेमाल करते हैं? हम सुसमाचारों को क्या महत्व देते हैं? कुछ ही मिनटों में, मैं सुसमाचारों की ऐतिहासिक विश्वसनीयता के बारे में बात करने जा रहा हूँ।

मार्क और अन्य सुसमाचारों के बारे में किए जाने वाले प्रत्येक निर्णय के केंद्र में अभी भी यही प्रश्न है। क्या हमारा यीशु सुसमाचारों की पहली सदी के यीशु जैसा दिखता है, या हमारा यीशु 21वीं सदी के किसी व्यक्ति जैसा दिखता है? मुझे लगता है कि हमेशा इस बात पर नियंत्रण होना चाहिए कि हम मार्क के सुसमाचार को किस तरह से अपनाएँगे। बेशक, अन्य पूर्वधारणाएँ हमारी समझ में आती हैं।

यदि आप चमत्कारों से इनकार करते हैं, तो आप इस बात से भी इनकार करेंगे कि यीशु ने चमत्कार किए थे। यदि आप मानते हैं कि चमत्कार हो सकते हैं, तो आप इस बात पर भी विश्वास करेंगे कि यीशु ने चमत्कार किए थे। यदि आप राक्षसों के अस्तित्व से इनकार करते हैं, तो आप भूत-प्रेत भगाने से भी इनकार करेंगे।

अगर आप मानते हैं कि आध्यात्मिक दुनिया मौजूद है, तो आप ऐसा नहीं करेंगे। इसे खाली स्लेट की तरह पढ़ना असंभव है। बेशक, मेरे हिसाब से, मुझे नहीं लगता कि हमें ऐसा करना चाहिए।

जैसे-जैसे मैं मार्क के सुसमाचार के करीब पहुंचूंगा, मैं इसे पढ़ूंगा और विश्वास के सादृश्य के माध्यम से इसकी व्याख्या करूंगा, मसीह कौन है इस पर अपने स्वयं के विश्वास के माध्यम से। इसका मतलब यह नहीं है कि हमें केवल विश्वासवादी होना चाहिए। हमें हमेशा अपने कारण और आशा के लिए जवाब देने के लिए तैयार रहना चाहिए।

अब, ऐतिहासिक विश्वसनीयता के प्रश्न पर आते हैं। मैं यहाँ सतह को थोड़ा खरोंचूंगा। सुसमाचारों के सामान्य रूप से विश्वसनीय होने के इस विचार का उपयोग करते हुए, हम स्वयं सुसमाचारों से क्या कुछ पहलू देखते हैं? मैंने पहले टिप्पणी की थी कि सुसमाचार ऐतिहासिक हैं, खुद को ऐतिहासिक रूप में प्रस्तुत करते हैं।

वास्तव में, जब हम उन्हें देखते हैं, तो वे खुद को एक बहुत ही विशिष्ट प्रकार के प्राचीन ऐतिहासिक लेखन के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिसे हम बायोस कहते हैं, एक प्रकार की प्राचीन जीवनी। यह एक ऐतिहासिक प्रस्तुति होगी जो एक मुख्य चरित्र पर केंद्रित होगी। यह प्राचीन दुनिया में एक असामान्य शैली नहीं है।

मुझे लगता है कि हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि सुसमाचार यीशु पर केन्द्रित हैं। यदि आप मार्क के सुसमाचार को पढ़ते समय एक मजेदार अभ्यास करना चाहते हैं, तो उन वाक्यों को हाइलाइट करें जो या तो यीशु के बारे में नहीं हैं, या जिनका विषय यीशु नहीं है, या जिनमें यीशु बोल नहीं रहे हैं। आपके पास हाइलाइट करने के लिए बहुत कम समय होगा।

दूसरे शब्दों में, मार्क में लगभग हर वाक्य यीशु के बारे में है। आपके पास जॉन बैपटिस्ट के बारे में छोटे-छोटे अंश हैं, लेकिन इसके अलावा, यह लगभग हमेशा इस बारे में है कि यीशु कौन है। इसलिए, ऐतिहासिक विशेषताओं को देखते हुए, मार्क के सुसमाचार और अन्य सुसमाचारों में हम जो चीजें देखते हैं उनमें से एक यह है कि प्रत्यक्षदर्शी गवाही महत्वपूर्ण लगती है।

इस बात के पुख्ता सबूत हैं कि सुसमाचार लेखकों ने खुद को यीशु की कहानी के रखवाले, संवाहक के रूप में देखा। वास्तव में, पूरे नए नियम में, यीशु कौन है, इस बारे में प्रत्यक्षदर्शी गवाही को बरकरार रखा गया है और उसका सम्मान किया गया है। सुसमाचार लेखक इतिहास लिखने का दावा करते हैं, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है।

वे ऐसी चीजें देते हैं जो सत्यापित की जा सकती थीं, जैसे नाम, स्थान, तिथियाँ, इत्यादि। विवरण का वह स्तर जो खुद को प्रस्तुत करता है, ऐसा लगता है कि उसे ऐतिहासिक रूप में समझा जाना चाहिए। ये अस्पष्ट विवरण नहीं हैं, बल्कि ठोस चित्रण हैं।

तीसरा, सटीक संचरण के प्रमाण देखे जा सकते हैं। हम घटनाओं और शब्दों को सहेजने की इच्छा देखते हैं, भले ही वे घटनाएँ आदर्श से कम लगे या वे कथन कठिन लगे। जब हम देखते हैं कि यीशु को कुछ नहीं पता, या शिष्यों को नीरस के रूप में देखा जाता है, या यहाँ तक कि शिष्यों में से एक को देशद्रोही के रूप में देखा जाता है, जब यीशु के नायक को बड़े पैमाने पर अस्वीकार किया जाता है, तो ये आश्चर्यजनक लगना चाहिए अगर हम सोचते हैं कि सुसमाचार ऐतिहासिक नहीं थे।

अगर ये सिर्फ़ मिथक-निर्माण थे, तो आप शायद उन शब्दों को अनदेखा करना चाहेंगे। आप शायद उन विचारों को प्रस्तुत न करना चाहें। लेकिन मार्क के पास वे हैं, जैसे कि बाकी सुसमाचारों में हैं।

कठिन कथनों और कठिन घटनाओं का यह संरक्षण ऐतिहासिक संस्करण का हिस्सा है। इसके अलावा, और मुझे लगता है कि इस विचार में जो कुछ भी उतना मान्यता नहीं पाता है जितना मिलना चाहिए, वह यह है कि सुसमाचार की कहानियों में पाए जाने वाले बाद के चर्च विवादों का अभाव है। दूसरे शब्दों में, यदि सुसमाचार बाद के चर्च का उत्पाद थे, यदि वे विकास के इस विकास थे, तो आप उम्मीद करेंगे कि कुछ घटनाएँ जो प्रारंभिक चर्च में बहस और विवाद का विषय थीं, वे मार्क के सुसमाचार और अन्य सुसमाचारों में अपना रास्ता खोजेंगी।

यहाँ तक कि प्रेरितों के काम में हम जो कुछ देखते हैं, वह मार्क और अन्य सुसमाचारों में नहीं दिखता, दूसरी और तीसरी सदी की चर्च की बहसों की तो बात ही छोड़िए। ऐसा लगता है कि सतही तौर पर भी, अगर आप चाहें, तो यह बात सही है कि सुसमाचार घटनाओं और उनके द्वारा दर्ज किए गए शब्दों के संदर्भ में विश्वसनीय हैं। यह ऐसी बात होगी जिसे बिना आस्था वाले व्यक्ति को भी आसानी से स्वीकार करना होगा।

अब, बेशक, आप इसी मुद्दे के बारे में पूछ रहे होंगे। क्या विरोधाभास नहीं हैं? क्या हमारे पास सुसमाचारों के बीच विरोधाभास नहीं हैं? मैं ऐतिहासिक सत्यता पर कैसे भरोसा कर सकता हूँ अगर ऐसा लगता है कि वे एक दूसरे के खिलाफ जाते हैं? बेशक, यह पूछना एक अच्छा सवाल है, लेकिन स्वाभाविक सवाल यह होना चाहिए: विरोधाभास क्या है, और सामान्य ऐतिहासिक प्रथा क्या है? विरोधाभास का मुद्दा एक ऐसा मुद्दा है जिस पर हम हमेशा वापस आते हैं। वास्तव में, आप देखेंगे कि अगर आप सुसमाचार पढ़ते हैं तो भी कभी-कभी ऐसी चीजें लगती हैं जो मेल नहीं खाती हैं।

यदि आप मार्क और मैथ्यू और ल्यूक को देखें, तो कुछ चीजें ऐसी हैं जो तुरंत बहुत समान लगती हैं, लेकिन कुछ ऐसी हैं जो आपको अपना सिर खुजलाने पर मजबूर कर देती हैं। इसमें जॉन के सुसमाचार और सिनॉटिक्स के बीच के अंतरों का उल्लेख भी नहीं है। लेकिन जब हम इन मामलों के बारे में सोचते हैं, तो क्या वे विरोधाभास हैं? मुझे लगता है कि हमें स्पष्ट होने की आवश्यकता है।

सुसमाचार की पुस्तकें प्रतिलिपियाँ नहीं हैं। वे वीडियोटेप नहीं हैं। प्राचीन इतिहास लेखन की यह पद्धति नहीं थी।

वास्तव में, यह आधुनिक इतिहास लेखन की पद्धति नहीं है। जब हम विरोधाभास के इस मुद्दे को संबोधित करना शुरू करते हैं, तो हमें सबसे पहले यह अंतर करना होगा कि क्या विरोधाभास हो सकता है और क्या सामान्य ऐतिहासिक अभ्यास है। तब, यदि आप चाहें, तो मार्क के सुसमाचार के पाठक और प्राप्तकर्ता द्वारा सामान्य ऐतिहासिक अभ्यास के भीतर क्या आसानी से समझा जा सकता है? उदाहरण के लिए, अधिकांश मामलों में, सुसमाचार लेखक, और मार्क के लेखक भी इससे अलग नहीं हैं, व्याख्या में संलग्न होंगे।

यह कोई असामान्य ऐतिहासिक प्रथा नहीं है। वर्बा बनाम एब्सिसिमा वोक्स, यह विचार एब्सिसिमा है क्रिया, वास्तविक शब्द या वास्तविक आवाज़। प्राचीन इतिहास में मानक कभी भी भुज नहीं था क्रिया, वास्तविक शब्द, लेकिन यह हमेशा वास्तविक आवाज थी।

दूसरे शब्दों में, इतिहासकार से यह अपेक्षा की जाती थी कि वह वक्ताओं की आवाज़ को सटीक रूप से प्रस्तुत करे, भले ही उसमें कुछ संपादन किया गया हो। दूसरे शब्दों में, कोई भी इसे पूरी तरह से नहीं बना सकता। एब्सिसिमा का एक स्पष्ट उदाहरण वर्बा मार्क १५:३४ है, जब हमारे पास वास्तव में यीशु की अरामी भाषा है।

जब यीशु क्रूस पर अरामी भाषा में चिल्ला रहे थे, तो हमें उसका अरामी रूप मिल गया। हमें वास्तविक शब्द मिल गए। मैं दो कारणों से इसका उल्लेख कर रहा हूँ।

हम जानते हैं कि मार्क का सुसमाचार ग्रीक भाषा में लिखा गया था, जिसे कोइन ग्रीक कहा जाता है। यीशु के शब्द, अगर यीशु, जैसा कि हम मानते हैं, अरामी भाषा बोलते थे, जो वह भाषा रही होगी जिसमें वह बड़ा हुआ और जिसमें वह रहता था, तो परिभाषा के अनुसार, उसने जो कुछ भी कहा, उसका अधिकांश भाग कोइन ग्रीक में अनुवाद किया जाना था। आप में से जो लोग भाषाओं में काम कर चुके हैं, आप यह जानते हैं: जब भी आप एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते हैं, तो एक व्याख्यात्मक कार्य होता है।

एक व्याख्या होती है जो घटित होती है और होती है। कुछ निर्णय लिए जाने होते हैं। आप एक ही बात को अलग-अलग तरीकों से कह सकते हैं।

हमें एब्सिसिमा मिलता है मार्क 15:34 में *verba* और जब हम वहां पहुंचेंगे, तो मैं एक तर्क दूंगा कि मुझे क्यों लगता है कि हमें *abscissima* मिलता है क्रिया। यह मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों त्याग दिया, की शुरुआत एलोई एलोई से होती है। एलोई एलोई से यह अरामी भाषा में शुरू होता है।

अक्सर कहा जाता है कि हमें वहाँ अरामी भाषा मिलती है क्योंकि यह कथन कितना शक्तिशाली है। मैं, निश्चित रूप से, उस कथन की शक्ति से इनकार नहीं करूँगा, लेकिन मार्क के सुसमाचार में अन्य शक्तिशाली कथन भी हैं। दिलचस्प बात यह है कि मुझे लगता है कि यह बताता है कि मार्क एक लेखक के रूप में कैसे हैं।

यदि आप मार्क 15:34 को देखें, तो देखें कि उसके बाद क्या होता है। यीशु के आस-पास के लोग क्या कहने लगते हैं? वे कहने लगते हैं कि वह एलिय्याह को बुला रहा है। खैर, अगर हम अरामी भाषा नहीं समझते, तो एलोई एलोई, जो कि क्रूस पर लटके एक व्यक्ति के मुँह से निकला है, जो अस्पष्ट और निर्जलित है और पसीना बहा रहा है, एलिय्याह की तरह लग सकता है।

यदि हमारे पास अरामी भाषा नहीं है, तो एब्सिसिमा वर्बा वहाँ, हम पूरी तरह से भ्रमित हो जाएँगे। उन्हें क्यों लगता है कि वह एलिय्याह को बुला रहा है? तो हमें एब्सिसिमा मिलता है क्रिया। लेकिन

कई बार मार्क, जैसा कि अन्य प्राचीन लेखक करते हैं, वह एब्सिसिमा वॉक्स, वास्तविक आवाज देगा।

और मुझे लगता है कि हमारे लिए इस बारे में सोचना महत्वपूर्ण है क्योंकि इस विचार पर वापस जाना कि सुसमाचार केवल इतिहास नहीं हैं, बल्कि वे कथाएँ हैं। यह एक लेखक के रूप में मार्क की भूमिका के बारे में भी बात करना शुरू करता है। मेरा मानना है कि मार्क पवित्र आत्मा से प्रेरित थे, जो यीशु और उनके जीवन की घटनाओं के एक आधिकारिक व्याख्याकार थे।

उन्होंने न केवल वास्तविक घटनाओं और वास्तविक कथनों को दर्शाया, बल्कि उनकी व्याख्या भी की, और वह व्याख्या सत्य है। और इसलिए, हम एक लेखक के रूप में मार्क द्वारा किए जा रहे विकल्पों को देखते हैं। मार्क इस बारे में चुनाव करता है कि वह क्या डालने जा रहा है और क्या नहीं।

और कभी-कभी, ये विकल्प, जो आम ऐतिहासिक प्रथाएँ रही होंगी, विरोधाभास समझे जा सकते हैं। यदि एक लेखक कई व्यक्तियों का उल्लेख करता है और दूसरा लेखक सिर्फ एक या दो का उल्लेख करता है, तो क्या यह विरोधाभास है, या यह विकल्प का प्रतिनिधित्व करता है? इसमें चयनात्मकता और चूक है। सुसमाचार लेखकों ने सिर्फ वही सब कुछ नहीं बताया जो वे जानते थे।

उन्होंने इस बारे में चुनाव किया कि वे क्या प्रस्तुत करना चाहते हैं, और मार्क ने भी यही किया। जब हम देखते हैं कि मार्क क्या करता है, उदाहरण के लिए, हम क्रूस पर यीशु के बारे में मार्क के कथनों की तुलना अन्य सुसमाचार लेखकों के कथनों से कर सकते हैं जब यीशु क्रूस पर थे। यीशु के ये सात वचन, आपने शायद उन्हें संदर्भित करते हुए सुना होगा, महान कथन हैं जो यीशु ने क्रूस पर होने पर कहे थे।

दिलचस्प बात यह है कि ये सात कथन जो दिए गए हैं, वे सभी एक ही सुसमाचार में मौजूद नहीं हैं। वे सभी जगह फैले हुए हैं। क्या ऐसा इसलिए है क्योंकि अलग-अलग लेखकों को नहीं पता था कि यीशु ने इनमें से कुछ अद्भुत बातें कही हैं? क्या उन्हें नहीं पता था कि यीशु ने कहा था, हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों त्याग दिया? या क्या एक लेखक को नहीं पता था कि यीशु ने कहा था, उन्हें क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।

या फिर उन्हें मैरी और जॉन के बीच होने वाले नए रिश्ते के बारे में पता नहीं था? या फिर ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उन्होंने अपनी कहानी में जो कुछ भी बताना चाहते थे, उसके बारे में चुनाव किया था, उस चरमोत्कर्ष में वे क्या चाहते थे जो उस विषय का हिस्सा हो जिसकी ओर वे बढ़ रहे थे? फिर से, यह एक सवाल है कि क्या यह एक विरोधाभास है या सामान्य ऐतिहासिक अभ्यास है। मार्क के बारे में कुछ जानने से पहले मैं कुछ बातें बताना चाहूँगा। एक है अकराह का विचार। अकराह पाचन की प्राचीन दुनिया में एक अलंकारिक उपकरण है।

इससे मेरा मतलब है कि किसी बड़ी चीज़ को लेना, किसी बड़ी कहानी या किसी बड़े भाषण या किसी बड़ी घटना को लेना और उसे किसी ऐसी चीज़ में बदलना जो छोटी हो लेकिन फिर भी सारगर्भित हो। इसलिए, उदाहरण के लिए, हम देखेंगे कि सुसमाचार लेखक, सभी प्राचीन

इतिहासकारों की तरह, किसी चीज़ को सरल बनाते हैं या उसे ऐसे रूप या पैकेज में रखते हैं जो वास्तव में वह व्यक्त कर सके जिस पर वे ज़ोर देना चाहते हैं या जिसे आसानी से याद रखा जा सके या प्रस्तुत किया जा सके। अलग-अलग लेखक इस बात पर अलग-अलग काम कर सकते हैं कि वे अकराह कैसे कर सकते हैं।

इसके अलावा, प्राचीन इतिहासकारों जैसे सुसमाचार लेखकों के लिए, विशेष रूप से प्राचीन जीवनी में लिखने वालों के लिए, घटनाओं का कालानुक्रमिक क्रम हमेशा महत्वपूर्ण नहीं था। अब, यह हमारे लिए अजीब लगता है क्योंकि किसी घटना की कालानुक्रमिक सटीकता ऐसी चीज़ है जो घटनाओं के बारे में हमारी सोच में हमेशा आवश्यक होती है। लेकिन आप जानते हैं, मैं दूसरे दिन एक किताब पढ़ रहा था, एक ऐतिहासिक जीवनी, और उसमें बहुत सारे प्लैशबैक थे जो घटित हो रहे थे या ऐसे विषयों को पेश कर रहे थे जिन्हें इसमें डाला गया था।

इसलिए, कुछ आधुनिक आत्मकथाएँ भी हमेशा एक निश्चित कालक्रम का पालन नहीं करती हैं। लेकिन यह बात प्राचीन ऐतिहासिक लेखकों और प्राचीन जीवनीकारों के लिए विशेष रूप से सच थी; वे विशेष घटनाओं को व्यवस्थित करने के तरीके में कुछ चयनात्मकता रख सकते थे। फिर से, यह पूरी तरह से मनगढ़ंत नहीं है।

घटना का घटित होना ज़रूरी है। ऐतिहासिक सटीकता की धारणा थी। लेकिन आप चाहें तो उस घटना को क्रम में रख सकते हैं, शायद विषय के अनुसार।

उदाहरण के लिए, मैथ्यू के सुसमाचार के बारे में सोचें। मैथ्यू में दृष्टांत एक अध्याय में व्यवस्थित हैं। अब, मुझे पूरा यकीन है कि यीशु ने अपने पूरे मंत्रालय में दृष्टांतों में बात की, लेकिन मैथ्यू ने वास्तव में इसे एक अध्याय में मौजूद बताया है।

एक व्यवस्था है जो हो सकती है। मार्क द्वारा इस व्यवस्था को करने का सबसे बड़ा उदाहरण, अगर आप चाहें, और हम इसे अपने सुसमाचार में देखने जा रहे हैं, तथाकथित मार्किन सैंडविच है। हम इसके बारे में बहुत बात करने जा रहे हैं।

यह एक अलंकारिक युक्ति है। मार्किन सैंडविच काफी सरल है। मार्क एक कहानी शुरू करता है।

हम इसे रोटी कहेंगे। कहानी शुरू होती है। कहानी खत्म होने से पहले, वह मांस, या यूँ कहें कि दूसरी कहानी जोड़ता है।

वह दूसरी कहानी पूरी करता है और फिर पहली कहानी, रोटी के निचले टुकड़े को फिर से शुरू करता है। तो, आप इस अलंकारिक उपकरण, इस मार्किन सैंडविच को देखते हैं, जहाँ मार्क एक घटना शुरू करेगा, एक नई घटना के बारे में बात करेगा, उस घटना के बारे में पूरी तरह से बात करेगा, और फिर पहली घटना को पूरा करेगा। अब, यह एक अलंकारिक उपकरण है।

मार्क को जो चीज़ें करने की अनुमति है, उनमें से एक है दो अलग-अलग चीज़ों को प्रस्तुत करना और उन्हें परस्पर एक-दूसरे की व्याख्या करना। अक्सर, मांस पहली घटना को किसी तरह का

अर्थ देता है। जब हम इन्हें देखते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है; आप देखेंगे कि ये दोनों घटनाएँ जरूरी नहीं कि कालानुक्रमिक क्रम में हों, लेकिन एक अलंकारिक उपकरण है जो घटित हुआ है।

यह सब हमारे लिए मंच तैयार करने की शुरुआत है। मुझे लगता है कि जब हम मार्क को देखते हैं, तो हम दो चीजों को देख रहे होते हैं। सबसे पहले, हम मार्क को ऐतिहासिक काम करते हुए देख रहे होते हैं।

हम मार्क को एक प्राचीन इतिहासकार की तरह काम करते हुए देख रहे हैं। हम मार्क को हमें यीशु के बारे में एक कहानी बताते हुए देख रहे हैं। हम उसे चयनात्मक, छोड़ने वाले और शामिल करने वाले के रूप में देखते हैं।

और इसलिए, मेरा मानना है कि मेरा कहना यह है। जब हम विरोधाभासों के बारे में बात करते हैं, तो हम अक्सर प्राचीन संदर्भ या उन शैलियों के बारे में सोचे बिना ऐसा करते हैं जिनसे हम निपट रहे हैं। हम ऐसे सवाल पूछते हैं जो शायद हमारे संदर्भ में तो समझ में आते हैं लेकिन प्राचीन ऐतिहासिक संदर्भ में समझ में नहीं आते।

हम भूल जाते हैं कि मार्क एक लेखक है जो मत्ती, लूका और यूहन्ना की तरह चुनाव करता है। ये चुनाव उनके द्वारा कही गई बातों की ऐतिहासिक सत्यता को नकारते नहीं हैं, बल्कि उस कहानी की चमक को दर्शाते हैं जिसे वे प्रस्तुत कर रहे हैं। तो, आइए मार्क के सुसमाचार के बारे में थोड़ी बात करें।

मार्क का न्यू टेस्टामेंट में बहुत बड़ा प्रभाव है। मेरे जैसे कई लोग मानते हैं कि मैथ्यू और ल्यूक ने अपने लेखन में मार्क के सुसमाचार का इस्तेमाल किया है। यह अकेले ही उस प्रभाव को दर्शाता है जो मार्क का था, जो शुरू में था और आज भी जारी है।

मार्क के सुसमाचार में हम क्या देखते हैं? खैर, उनकी साहित्यिक शैली अविश्वसनीय रूप से तेज़ है। मार्क के सुसमाचार में एक गति है। यह एक तेज़ गति से आगे बढ़ने वाली कथा है।

उदाहरण के लिए, शब्द तुरंत, या अंग्रेजी शब्द तुरंत, जो एक ग्रीक शब्द से आता है, 42 बार इस्तेमाल किया गया है। 42 बार, मार्क तुरंत कहकर किसी बात की शुरुआत करता है। मैथ्यू ने ऐसा पाँच बार किया।

लूका ने इसे एक बार किया है। तुरंत, सीधे, तुरंत, या फिर, अगले का यह प्रयोग कथा को आगे बढ़ाने का प्रभाव डालता है। मार्क के सुसमाचार में वर्तमान काल और वर्तमान काल क्रियाओं पर बहुत ज़ोर दिया गया है।

अब, जब वर्तमान काल की क्रियाओं का उपयोग किया जाता है, तो आपको लग सकता है कि यह एक अजीब अवलोकन है, लेकिन यह जीवंतता की भावना पैदा करता है। मार्क के सुसमाचार में क्रिया है। मार्क अक्सर घटनाओं को एक साथ समूहित करता है।

धार्मिक नेता और चुनौतियाँ अक्सर एक साथ ही आते हैं। भूत-प्रेत भगाने की घटनाएँ एक साथ ही आती हैं। चमत्कार एक साथ ही आते हैं।

हमने इस बारे में बात की है कि कैसे सुसमाचार लेखक अक्सर अपने कार्यक्रमों को प्रस्तुत करने के तरीके के चयन में थीम या विषयों का उपयोग करते हैं। बेशक, मैंने मार्क सैंडरसन थीम का उल्लेख किया है, और जब हम सुसमाचार में प्रवेश करेंगे तो हमें इनमें से बहुत से मिलेंगे। आप तीन देखेंगे।

मार्क को त्रिक का शौक है। उन्हें संख्या तीन और पैटर्न और तीनों के सेट, तीन नाव के दृश्य और जुनून की भविष्यवाणियों के तीन चक्रों का शौक है। मुझे लगता है कि आपको मार्क के सुसमाचार में बहुत सारी विडंबनाएँ मिलेंगी।

परमेश्वर का पुत्र जो कष्ट सहता है। परमेश्वर का शक्तिशाली पुत्र जो कष्ट सहता है। यह एक विडंबनापूर्ण विचार है।

यह अप्रत्याशित है। हम विडंबना के कई मौके देखेंगे। मार्क स्ट्रॉस ने मार्क के सुसमाचार पर अपनी पुस्तक में भी एक अद्भुत पुस्तक लिखी है जो चार सुसमाचारों पर मेरे विचारों को प्रभावित करती है।

मार्क स्ट्रॉस इस बारे में बात करते हैं कि कैसे धार्मिक नेता ही बाहरी लोग बन जाते हैं। गैर-यहूदी ही अंदरूनी लोग बन जाते हैं। व्यावहारिक दृष्टांत स्वर्गीय सत्यों के बारे में बताते हैं।

यीशु को उसके अपने लोगों ने ही अस्वीकार कर दिया, इत्यादि। मार्क के सुसमाचार में बहुत सारी विडंबनाएँ हैं। जब हम मार्क के यीशु के चित्र को देखते हैं, तो हमें एक चीज़ जो मार्क के लिए अद्वितीय लगती है, या शायद इसे बेहतर तरीके से कहें तो मार्क जिस पर ज़ोर देता है, वह है यीशु की मानवता।

यदि आप चाहें तो मार्क के अनुसार सुसमाचार में यीशु बहुत ही सरल हैं। वह करुणा, आक्रोश, शोक, प्रेम, क्रोध, विस्मय व्यक्त करते हैं। गेथसेमेन में चिंता है, दृढ़ता है।

उनके लौटने के समय के बारे में अज्ञानता है। मार्क के सुसमाचार में मानवता है। हाथ में हाथ डालकर, हम शक्ति और अधिकार भी देखते हैं।

अध्याय 1 में तुरंत शुरू होने वाली चीज़ों में से एक, जिसे हम अगली बार देखेंगे, वह है कि यीशु किस तरह से परमेश्वर के अधिकार के साथ बोलते और कार्य करते हैं। असाधारण शिक्षा, उपचार, भूत-प्रेत भगाना, चमत्कार। हम उनके बारे में एक रहस्य देखेंगे, एक मसीहाई रहस्य, यह विचार जहाँ यीशु न केवल यह प्रकट करते हैं कि वे कौन हैं, बल्कि इसे गुप्त भी रखते हैं।

हम इस तरह की बहुत सी प्रगति देखेंगे। बेशक, यीशु कौन है, इस सवाल पर आगे बढ़ते हुए, हम जिन चीज़ों पर ध्यान देंगे उनमें से एक यह है कि यीशु के पास कितने सवाल हैं, या यूँ कहें कि मार्क के पास कितने सवाल हैं। मार्क के पास यीशु कौन है, इस बारे में कई सवाल हैं।

ऐसा लगता है कि कोई हमेशा यीशु के बारे में सवाल पूछता रहता है। बेशक, पतरस के कबूलनामे और फिर अंततः सूली पर सूबेदार की घोषणा तक। कुछ अन्य विशेषताएँ हैं जिनके बारे में हमें जागरूक रहना चाहिए क्योंकि हम मार्क के बारे में सोचना बंद कर रहे हैं।

हर जगह विरोधी हैं। आपके पास शैतान की सेनाएँ और धार्मिक नेता हैं। मुख्य विरोधियों को शुरू से ही राक्षसों के रूप में पेश किया जाता है, लेकिन फिर धार्मिक नेता भी, जिन्हें लगभग एक साथ पेश किया जाता है, विरोध में खड़े होते हैं।

धार्मिक नेता हमेशा इस बात से चिंतित रहते हैं कि यीशु पापियों के साथ संगति करते हैं। यीशु की शिक्षाएँ उनकी लोकप्रियता को खतरे में डालती हैं। हम मंदिर के विनाश और अन्य पहलुओं को देखकर यह समझ जाएँगे।

हम शिष्यों को देखते हैं। मार्क में शिष्यों की भूमिका बहुत ही अस्पष्ट है। यीशु उन्हें खोजता है, उन्हें बुलाता है, बारह लोगों को नियुक्त करता है, उन पर बहुत भरोसा करता है, उन्हें असाधारण अधिकार देता है।

लेकिन चारों सुसमाचारों में से, शिष्यों के बारे में मार्क का चित्रण सबसे नकारात्मक है। मार्क में, शिष्य अक्सर यीशु को गलत समझते हैं। मसीहा की पीड़ित भूमिका को पहचानने में उनकी स्पष्ट अनिच्छा है।

और अन्य सुसमाचारों के विपरीत, यदि आप चाहें तो शिष्यों के ठीक होने का संकेत दिया गया है, लेकिन मार्क के सुसमाचार के अंत में पूर्ण रूप से ठीक होने का संकेत नहीं है। बगीचे में शिष्यों के खिलाफ यीशु का उदाहरण दिया गया है। यीशु दृढ़ रहते हैं, लेकिन वे भाग जाते हैं।

मुझे लगता है कि कुछ हद तक मार्क जो दिखा रहा है वह यह नहीं है कि शिष्यों के लिए तिरस्कार है, गलत मत समझिए, बल्कि यह एक प्रस्तुति है कि यीशु इस बात का प्रतिमान है कि इसका अनुसरण करने का क्या मतलब है, परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने का क्या मतलब है। यह शिष्यों की कमियाँ हैं जिनका उपयोग यीशु की वफ़ादारी को उजागर करने के लिए किया जाता है, और जब हम मार्क को देखेंगे तो हम इसे बार-बार देखेंगे। कुछ धार्मिक विषय जो हम पाएँगे, परमेश्वर का राज्य मार्क में एक केंद्रीय संदेश है।

यीशु के राज्य की शिक्षा में वर्तमान और भविष्य दोनों तत्व शामिल हैं। राज्य मौजूद है क्योंकि राजा मौजूद है, लेकिन आने वाले राज्य और भविष्य की स्थापना के बारे में भी टिप्पणियाँ हैं। हम यीशु के सेवक मसीहा के इस विचार को भी देखेंगे, कि कैसे वह परमेश्वर का शक्तिशाली पुत्र, मनुष्य का पुत्र, मसीहा है, लेकिन वह वह भी है जो प्रभु के सेवक के रूप में मरने जा रहा है, जो प्रायश्चित्त बलिदान है।

हम मार्क में इनमें से बहुत से शीर्षकों की पुनः परिभाषा देखेंगे, अक्सर, मुझे लगता है, यशायाह 53 को ध्यान में रखते हुए। अंत में, जैसा कि हम इसे समाप्त करते हैं, मैं लेखकत्व के कुछ सवालों के बारे में बात करना चाहता हूँ। हम इसे मार्क के अनुसार सुसमाचार कहते हैं।

हम इसे ऐसा क्यों कहते हैं? पाठ में ही, यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि पाठ गुमनाम है। जब आप पॉल के पत्रों के बारे में सोचते हैं, तो आप पाते हैं कि मैं, पॉल, चर्च को लिख रहा हूँ। हम सुसमाचार में लेखक होने का कोई दावा नहीं करते हैं।

परंपरागत पहचान हमेशा जॉन मार्क की रही है, जो पॉल और पीटर दोनों का साथी था। चौथी शताब्दी के आसपास के शुरुआती चर्च इतिहासकार यूसेबियस ने पापियास को उद्धृत किया, जो दूसरी शताब्दी के पहले भाग में रहने वाले एक चर्च नेता थे, और कहा कि मार्क पीटर के लिए दुभाषिया या अनुवादक थे, उन्होंने जितना भी लिखा, पीटर ने मसीह के कथनों और कार्यों के बारे में सटीक रूप से लिखा, लेकिन क्रम में नहीं, जो मुझे आकर्षक लगता है। क्योंकि वह प्रभु का श्रोता या अनुयायी नहीं था, लेकिन जैसा कि मैंने पीटर के बारे में कहा, यह उद्धरण है, जिसने अपनी शिक्षाओं को आवश्यकतानुसार अनुकूलित किया और प्रभु के कथनों को व्यवस्थित तरीके से व्यवस्थित नहीं किया।

इसलिए, मार्क ने कुछ बातें याद आने पर उन्हें लिखने में कोई गलती नहीं की। फिर से, यूसेबियस ने यहाँ इसी बात का संदर्भ दिया है, जॉन मार्क के बारे में यह उद्धरण। हमने इसे देखा है।

इरेनियस, क्लेमेंट ऑफ एलेक्जेंड्रिया, ओरिजन, जेरोम, इस पर प्रारंभिक चर्च में काफी सहमति रही है। पीटर के साथ संबंध, हालांकि अब बहुत से न्यू टेस्टामेंट विद्वानों द्वारा खारिज कर दिया गया है, मुझे लगता है कि यह अभी भी विश्वसनीय है। मुझे लगता है कि जब आप देखते हैं कि मार्क के सुसमाचार में पीटर के साथ कैसा व्यवहार किया गया है, तो यह दिलचस्प है, और मार्क में पीटर की एक प्रमुखता है जिसे कुछ हद तक उजागर किया गया है।

यहां तक कि अगर आप चाहें तो पतरस को पहले प्रेरित के रूप में भी बुकएंड में शामिल किया गया है, जिसका नाम अध्याय 1, श्लोक 16 में दिया गया है, और अंतिम प्रेरित जिसका नाम दिया गया है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप अध्याय 16 को कैसे समझते हैं। पतरस, मत्ती और लूका के बारे में जो कुछ भी लिखा गया है, वह मार्क में नहीं है, लेकिन मत्ती और लूका में जो लिखा गया है वह पीटर के भविष्य के बारे में है, जो मुझे दिलचस्प लगता है। मार्क के सुसमाचार में इसके बारे में कम लिखा गया है।

कुछ लोगों ने सोचा है कि क्या यह यीशु की कहानी के बारे में बात करते समय पतरस की अपनी विनम्रता का हिस्सा था, कि उसने प्रभु से प्राप्त उच्च प्रशंसा को थोड़ा कम कर दिया। प्रारंभिक चर्च में मार्क का महत्व, ज़ाहिर है, स्पष्ट है। मुझे लगता है कि एक बात दिलचस्प है कि मार्टिन हेंगल, एक नए नियम के विद्वान ने इस पर कुछ काम किया है; हम इसे मार्क के अनुसार सुसमाचार कहते हैं क्योंकि, हमारी शुरुआती पांडुलिपियों में, यह पाठ के शीर्ष पर, पांडुलिपियों के शीर्ष पर शीर्षक है।

अब, हेंगल का तर्क है कि यह शीर्षक काफी पहले से ही जुड़ा हुआ होगा। वास्तव में, जैसे-जैसे यह बाहर आना शुरू हुआ, यह पहचानने की आवश्यकता हुई होगी कि लेखक कौन था। हेंगल का तर्क था कि यदि यह शीर्षक सबसे शुरुआती पांडुलिपियों में से एक में नहीं था, तो हम मार्क

के सुसमाचार को एक अलग शुरुआत के साथ देखने की उम्मीद करते, इस व्यक्ति के अनुसार सुसमाचार या उसके अनुसार सुसमाचार इसमें कुछ भिन्नता हो सकती है।

लेकिन हिंगल का तर्क है कि मार्क काफी पहले से तय लग रहा है, इसका मतलब शायद यह है कि इसमें काफी निश्चितता थी। साथ ही, हमेशा यह सवाल उठता है कि क्या मार्क वह व्यक्ति होगा जिसे आप बनाना चाहेंगे? क्या जॉन मार्क वह व्यक्ति होगा जिसके साथ आप सुसमाचार को जोड़ेंगे? वह नए नियम में कोई प्रमुख व्यक्ति नहीं है। माना कि पीटर और पॉल का संदर्भ है, लेकिन वह पीटर नहीं है, और वह पॉल भी नहीं है।

मुझे लगता है कि यह सवाल, लेखक के मामले में मार्क के खिलाफ सवाल की मांग करता है, लगभग इस बात का सबूत पेश करने की मांग करता है कि फिर वे सभी लोगों में से मार्क को क्यों चुनेंगे? आपके पास बगीचे में बिना कपड़ों के भागने वाले व्यक्ति के साथ मार्क के इस चरित्र का संभावित रूप से एक स्पष्ट संदर्भ भी हो सकता है। आखिरकार, हम निश्चित रूप से नहीं जानते। क्या कुलुस्सियों और फिलेमोन और 2 तीमुथियुस और 1 पतरस में मार्क का उल्लेख है? क्या यह वही मार्क है जिसने यह सुसमाचार लिखा है? आरंभ में, प्रारंभिक चर्च ने हाँ कहा था, और मुझे लगता है कि सबूत अभी भी इसका समर्थन करेंगे।

ऐतिहासिक रूप से, हमेशा से यह माना जाता रहा है कि मार्क ने रोमन चर्च को पत्र लिखा था, संभवतः रोम से। हम जानते हैं कि मार्क रोम के चर्च से जुड़ा था। फिर से, यह परंपरा पर आधारित है।

इसकी तिथि 50 और 60 के दशक के आसपास शुरू होती है। यह सबसे पुरानी तिथियों में से एक है, जबकि अन्य लोग बाद की तिथि के बारे में तर्क देते हैं। कुछ पीटर की शहादत के आसपास हो सकते हैं।

एक विचार यह है कि जब कुछ प्रत्यक्षदर्शी मरने लगे तो सुसमाचार लिखना शुरू हुआ। इसकी आवश्यकता महसूस होने लगी, खासकर उत्पीड़न में वृद्धि और उत्पीड़न के क्षेत्र जो होने लगे थे। फिर से, यह कहना मुश्किल है।

मुझे लगता है कि मार्क काफी पहले थे, व्यक्तिगत रूप से, शायद उस समय के आसपास, लगभग 60 या 70। अंतिम बात जो मैं उल्लेख करना चाहूँगा, बस एक बड़े मुद्दे में से एक का संकेत देते हुए, मार्क का सुसमाचार, यह है कि यह कहाँ समाप्त होता है? आज हमारी बाइबल में मार्क 16, 9 से 20 तक है, लेकिन बाइबल के कई आधुनिक संस्करणों में इसके चारों ओर विशाल कोष्ठक लिखे हुए हैं। यदि आप कभी सोच रहे हैं, तो इसके पीछे एक कारण है।

एक यह है कि कुछ अधिक विश्वसनीय पांडुलिपियों में, यह निर्धारित करने की प्रक्रिया कि मूल शब्द क्या थे, उसे पाठ्य आलोचना कहा जाता है। यह विचार एक तुलना है जहाँ आप विभिन्न पांडुलिपियों को देखते हैं, देखते हैं कि वे कैसी हैं, वे कैसे भिन्न हैं, कौन सी पुरानी हैं, और कौन सी अधिक मजबूत हैं। विधियों का एक पूरा सेट उपयोग किया जाता है।

जो बातें पाई गईं, उनमें से एक यह है कि मार्क 16 की आयतें 9 से 20 तक कुछ सबसे विश्वसनीय पांडुलिपियों में नहीं पाई जाती हैं। इसलिए, जिस प्रक्रिया का उपयोग मार्क अध्याय 1, आयत 1 से 16:8 को प्रमाणित करने के लिए किया जाता है, वह प्रक्रिया किसी तरह से 9 से 20 के खिलाफ बोलती है। 16 के अंतिम भाग में बहुत से शब्द मार्क में उतने अच्छे नहीं दिखाई देते हैं, और इसलिए विचार यह है कि क्या मार्क ने इतनी जल्दी उन शब्दों का उपयोग करना शुरू कर दिया होगा जो उसने पहले नहीं किए थे? ग्रीक शैली को आयत 8 से आयत 9 तक का संक्रमण माना जाता है, अगर आप पढ़ते हैं, तो यह केवल आयत 8 के विषय के संदर्भ में परेशान करने वाला है, जो महिलाएँ हैं।

पद 9 में यीशु को विषय के रूप में माना गया है, लेकिन फिर भी कोई स्पष्ट परिवर्तन नहीं हुआ है। पद 9 में मैरी मैगडलीन को इस तरह से प्रस्तुत किया गया है कि ऐसा लगता है कि पाठक उसे नहीं जानता, फिर भी उसका उल्लेख अध्याय 15 में पहले ही किया गया था। जिन चीज़ों पर आप ध्यान देते हैं, उनमें से एक पद 9 से 20 है, जो अन्य सुसमाचारों से पुनरुत्थान के प्रकट होने का संकलन प्रतीत होता है।

क्योंकि आप देखिए, छोटे अंत के साथ यही समस्या है। छोटे अंत के साथ, आपको पुनरुत्थान का आभास नहीं होता, जबकि सुसमाचारों में पुनरुत्थान का आभास होता है। सबसे शुरुआती पंथ कथनों में से एक यह है कि मसीह मृतकों में से जी उठा।

और इसलिए, विचार यह है कि, ठीक है, मार्क के पास पुनरुत्थान की उपस्थिति कैसे नहीं हो सकती? और इस पर बहुत सी अलग-अलग बहसें हैं। विकल्प यह प्रतीत होते हैं कि या तो उसके पास पुनरुत्थान की उपस्थिति नहीं थी, और वह बस इस पर इशारा कर रहा है। उसके पास पुनरुत्थान की उपस्थिति थी, और यह वही है जो हमें 9 से 20 तक में मिलता है, या उसके पास पुनरुत्थान की उपस्थिति थी जो किसी तरह इतिहास में खो गई है।

दूसरी बात यह है कि वह एक को पूरा करने से पहले ही मर गया। आपको विभिन्न सिद्धांत मिलते हैं। आपको यह बताने के लिए कि मैं इसे कैसे देखूंगा, मुझे लगता है कि श्लोक 9 से 20 पर पर्याप्त शाब्दिक संदेह है कि मैं इसे विषयों में मार्क को ट्रैक करने या मार्क क्या कर रहा था, के संदर्भ में मार्क के सुसमाचार की मेरी चर्चा के हिस्से के रूप में शामिल नहीं करूंगा।

अगर मुझे इस पर कोई राय बनाने के लिए मजबूर किया गया, तो मुझे लगता है कि मार्क के सुसमाचार का एक अंत है जो श्लोक 8 के बाद आया था जो किसी तरह या तो सुसमाचार में कभी नहीं आया या इतिहास में खो गया है। मुझे यह अजीब लगता है कि पुनरुत्थान की कोई उपस्थिति नहीं है। लेकिन ऐसे कई रहस्य हैं जो एक दिन ज्ञात हो जाएंगे, और शायद मार्क का अंत उनमें से एक होगा।

मैं आपके साथ आने वाले समय का इंतजार कर रहा हूँ क्योंकि हम मार्क के सुसमाचार का अन्वेषण करना शुरू कर रहे हैं। धन्यवाद।

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स हैं जो मार्क के सुसमाचार की पुस्तक पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 1

है, मार्क की पुस्तक का परिचय।